द्वितीय वर्ष कला

विषय- मध्ययुगीन कविता

पाठ का नाम- संत मीराबाई (पद)

प्रस्तुतकर्ता-डॉ. गजानन वानखेडे

बलीराम पाटील कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, किनवट

मीराँबाई का जीवन परिचय-

मीराँबाई हिंदी साहित्य के इतिहास में कृष्ण-भक्ति शाखा के अंतर्गत विष्णु के अवतार कृष्ण को आराध्य मानकर भक्ति करनेवाली मीराँ एक प्रमुख स्त्री कृष्णभक्त है। वैसे कृष्ण की भक्ति करनेवाली मीरा के पूर्व दक्षिण की अण्दाल नामक कृष्ण भक्तिन का भी हिंदी साहित्य में उल्लेख मिलता है लेकिन उसके बारे में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध नहीं है। भक्ति की भागीरथी संत मीराबाई का जन्म सन 1448 में कुडकी नामक गाँव में हुआ था ऐसा माना जाता है। पिता का नाम रत्नसिंह और माता का नाम वीर कुँवरी था | माँ की मृत्यु के पश्चात उसकी देखभाल तथा पालन-पोषण उसके दादा रावदुधाजी ने किया, जो एक वैष्णव-भक्त थे। मीरा अपने पितामह को बहुत चाहती थी । अतः उनकी कृष्ण-भक्ति का प्रभाव मीरा पर बचपन से ही पढ़े बिना नहीं रहा। वह जन्म से ही सुंदर, मृदुभाषी, दयालु थी और उसकी आवाज भी सरस, सुरीली एवं मीठी थी। उसके इन सभी गुणों की चर्चा सुनकर ही मेवाड़ के राजा राणा सांगा ने अपने पुत्र भोजराज के लिए मीरा के दादा रावदुधाजी के सामने विवाह का ' प्रस्ताव रखा था, जिसे रावदुधाजी ने सहर्ष स्वीकार किया । तेरह वर्ष की आयु में ही मीरा का विवाह कुंवर भोजराज के साथ हुआ । कृष्ण-भक्ति में तल्लीन मीरा का मन अपने पति में नहीं लगा और दुर्भाग्यवश वह जल्दी ही विधवा हो गई। पति की मृत्यु के पश्चात तत्कालीन समाज की कुप्रथा के अनुसार जब के सास ने मीरा को सती होने को कहा, तो मीरा ने शायद भारतीय इतिहास में पहली बार सामाजिक परंपरा सती प्रथा का विरोध करते हुए कहा था"सती न होस्यां गिरधर गास्या, म्हारा मन मोहो धननामी ।जेठ बहू को नातों न राणा जी, हूँ सेवक थे स्वामी ।।" उसके पश्चात वह लोक लाज की परवाह किए बिना कृष्ण-भक्ति के रंग में रंगकर भजन-कीर्तन, नर्तन करने लगी। उन्होंने कुलमयार्दा एवं (लोकलाज को त्यागकर स्वयं को पूर्णतः कृष्ण के प्रति समर्पित किया ।

-रचनाएँ -

राग गोविन्द, सोरठ के पद, गीतगोविंद की टीका, नरसीजी : रो माहेरो तथा फुटकल पद आदि मीरा की रचनाएँ मानी जाती है।

रूप सौंदर्य

जब से मोहिं नंदनंदन दृष्टि पड्यो माई |

तब से परलोक लोक कछु ना सुहाई ।।1।।

मोरन की चंद्र कला सीस मुकुट सोहै ।

केसर को तिलक भाल तीन लोक मोहे ।।2।।

कुण्डल की अलक झलक कपोलन पर छाई ।

मनो मीन सरवर तजि मकर मिलन आई ।। 3 ।।

भावार्थ-

मीरा ने कृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहा है कि जब से नंद राजा के बेटे कृष्ण के सौन्दर्य पर मेरी दृष्टि पड़ी तब से मुझे लोक-परलोक की कोई वस्तु भाती नहीं या कुछ भी मुझे सुहाता नहीं । कृष्ण के सिरपर मुकुट मोर पंख से शोभायमान है, माथे पर लगा हुआ केसरिया तिलक तीनों लोग को मोहित करता है। उनके कानों के कुंडल की गालों पर पड़ी परछाई को देखकरऐसा लगता है मानो मछली सरवर को त्यागकर यहाँ मकर को मिलने आ गई हो। ऐसे अनुपम सौंदर्य के सागर कृष्णपर मीरा स्वयं को समर्पित करती है।

बिरह की अनुभूति

घड़ी एक नहिं आवडे, तुम दरसन बिन मोय |
तुम हो मेरे प्राण जी, का सूँ जीवन होय ।। टेक।।
धान न भावे नींद न आवे, बिरह सतावे मोय ।
घायल सी घूमत फिरुँ रे मेरा दरद न जाणे कोय ।।1।।
दिवस तो खाय गमायो रे, रैण गमाई सोय ।
प्राण गमायो झूरताँ रे, नैण गमाई रोय ||

भावार्थ-

जहां कृष्ण के रूप सौंदर्य ने मीरा को अपनी ओर आकर्षित किया वहाँ कृष्ण की प्राप्ति के अभाव ने उसे विरह की पीड़ा भी दी है। अतः मीरा के पदों में कृष्ण के प्रति विरहानुभूति की तीव्रता व्यक्त हुई है। यहाँ कृष्ण के प्रति (अपनी विरह की अनुभूति को व्यक्त करते हुए मीरा ने कहा है कि, हे कृष्ण तुम्हारे दर्शन के बिना मुझे एक पल भी रहा नहीं जाता। तुम ही मेरे प्राण हो और बिना प्राण के मैं जीवन कैसे जी सकती हूँ। तुम्हें न देखने से, न मुझे कुछ भाता है, न मुझे नींद आती है । तुम्हारा विरह मुझे हमेशा सताती है जिससे मैं घायल की तरह इधर-उधर भटकती रहती हूँ। मेरी इस विरह वेदना या पीड़ा को कोई नहीं जानता। तुम्हारे अभाव में लगता है कि मैंने दिन खा कर और रातें सो कर गंवा दी हैं। तुम्हारे विरह में तड़पकर मेरे प्राण नष्ट हो रहे हैं और विरह की वेदना से रो-रोकर मेरी आंखें भी मैंने गंवाइ हैं। यहाँ कृष्ण के प्रति मीरा की तीव्र विरहानुभूति व्यक्त हुई है।

प्रभु का अनुग्रह

मीरा मगन भई हरि के गुण गाय । | टेक ||
सांप पिटारा राणा भेज्या, मीरा हाथ दियो जाय ।
न्हाय धोय जब देखण लागी, सालिगराम गई पाय ।।1।।
जहर का प्याला राणा भेज्या, अमृत दीन्ह बनाय।
न्हाय धोय जब पीवण लागी, हो अमर अँचाय ||2||
सूल सेज राणा ने भेजी, दीज्यो मीरा सुलाय ।
सांझ भई मीरा सोवण लागी, मानो फूल बिछाय।।3।।
मीरा के प्रभु सदा सहाई, राखे बिघन हटाय ।
भजन भाव से मस्त डोलती, गिरधर पै बलि जाय ।।4।।

भावार्थ -

भावार्थ

कहा जाता है कि विरह से ही प्रेम एवं भक्ति में निखार आ जाता है। सच्ची भक्ति और निष्ठा से ही भक्त अपने प्रभु का अनुग्रह प्राप्त करता है और मीरा ने भी अपनी सच्ची भक्ति और समर्पण भाव से ही कृष्ण का अनुग्रह प्राप्त किया है। कहा जाता है कि मीरा के समर्पण भाव से ही हमेशा कृष्ण ने उसकी रक्षा की है। पति की मृत्यु के पश्चात मीरा का कुलमर्यादा एवं लोकलाज को त्यागकर साधु - संगति में जाकर मस्त भाव से कृष्ण-भक्ति के मग्न होकर गाना-नाचना मीरा के ससुरालवालों को अच्छा नहीं लगा तब उन्होंने उसे विविध प्रकार की यातनाएं दी। कहा जाता है कि जब राणा विक्रमादित्य द्वारा मीरा को विक्रमादित्य द्वारा मीरा को मारने के लिए सांप का पिटारा मीरा के पास भेजा गया तब नहा धोकर जब मीरा ने उसे देखा तो उसे उस पिटारे में पत्थर की मूर्ति दिखाई दी। इसके पश्चात राणाद्वारा जहर का प्याला भेज दिया गया तब वह जहर ●अमृत बनकर मीरा को अमर बना देता है। यहाँ भी जब सफलता नहीं मिलती तब राणा ने मीरा को सोने के लिए मृत्यु की शय्या बनाकर भेज दी । जब भजन एवं भक्ति भाव से मग्न होकर शाम होते ही मीरा उसपर सोने के लिए जाती है, तो वह मृत्युशय्या न होकर फूल की शय्या बन जाती है। लगता है मानो उस शय्या पर फूल बिछाए गए हो। इस प्रकार मीरा भजन भाव से मस्त होकर “गिरिधर अर्थात कृष्ण पर स्वयं को न्योछावर कर देती है और कृष्ण हर समस्याओं में उसकी रक्षा करते रहते हैं। यहां एक भक्त की ईश्वर के प्रति "सच्ची भक्ति को दर्शाया गया है ।

धन्यवाद.....!